International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(2): 201-203
Received: 07-11-2022
Accepted: 27-12-2022

Dr. Meenu Nain
Associate Professor, Govt. PG College for Wormen, Rohtak, Haryana, India

Corresponding Author:
Dr. Meenu Nain
Associate Professor, Govt. PG College for Wormen, Rohtak, Haryana, India

भारतीय इतिहास में मध्य काल के दौरान शिक्षा व्यवस्था का समीक्षात्मक अवलोकन

Dr. Meenu Nain

सारांश
प्रस्तुत अध्ययन मध्य काल के दौरान भारतीय शिक्षा व्यवस्था की समीक्षा करता है। मध्यकाल को भीषण युद्धो, अनाचारों एवं आक्रांताओ का काल माना गया है। इस दौरान मुगलों की कई पुश्तें तुर्क, मुगल, खिलजी, मंगोल इत्यादि द्वारा भारतीय संस्कृति पर कई मोर्चों से हमले किये गए परिणामस्वरूप मुगलिया जड़े भारत में फलने फूलने लगी थी। यह अध्ययन मध्य काल के दौरान शिक्षा के इस्लामीकरण हेतु संचालित शिक्षण उद्देश्यो, शिक्षण पद्धतियों एवं शिक्षण के पाठ्यक्रम के संबंध नें जा ज्ञान उपलब्ध कराता है।

कूट शब्द: इस्लामीकरण, मकतब, मस्जिदें, मदरसे, नालंदा, वैदिक शिक्षा।

प्रस्तावना
भारतीय गणराज्य की शिक्षा प्रणालियाँ एवं भारतीय दर्शन विश्व के सबसे प्राचीनतम एवं व्यवस्थित विरासतों के रूप में सदैव अग्रणी रहे हैं। इसकी प्राचीनता को इस बात से समझा जा सकता है, कि जितनी प्राचीनतम मानवीय उत्पति का अवधारणाएँ मानी जाती है लगभग उतनी ही प्राचीन इन शिक्षा प्रणालियों का भी इतिहास है। भारत में मध्य काल की शुरुआत 7 वी सदी से हुई, बहुतेरे शिक्षा शास्त्रियों के अनुसार मध्य काल के दौरान उससे पूर्व संचालित उत्कृष्ट एवं उन्नत शिक्षा व्यवस्थाओं के पूर्ण रूपेण इस्लामीकरण करने के भरसक प्रयास हुए । मध्य कालीन शिक्षा व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य इस्लामी का प्रचार प्रसार एवं इसका इस्लामीकरण करना रहा। शिक्षा के प्रमुख केंद्रों के रूप में मकतबों तथा मदरसों की स्थापना तेजी से हुई। उर्दू एवं फ़ारसी भाषा के बोलने, चालने एवं लिखने वालो की संख्या में तेजी से अधिकता आयी। सरकारी अथवा प्रशासकीय कार्यों में फ़ारसी की समझ रखने वाले शिक्षा शास्त्रियों को रखा जाने लगा। मुस्लिम आक्रांताओ द्वारा हुए तीव्र हमलों ने भारतीय वैदिक शिक्षा की उच्चतम, विशिष्टम एवं ख्यातिलब्ध शिक्षण केंद्रो नालंदा, तक्षशिला एवं विक्रमशिला जैसे अनेकों विश्वविद्यालयों को नष्ट कर दिया गया एवं प्रारंभिक शिक्षा हेतु मकतबों व उच्च शिक्षा हेतु मदरसों का तीव्र प्रसार अपने चरम पर था। यदि इन विश्वविद्यालयों के जबरन नष्ट किये जाने के समय को प्राचीन वैदिक शिक्षा का अंत कहा जाए तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी।
डॉ युसुफ हुसैन के शब्दो में, " मध्य युग में प्रत्येक बात को मजहबी दृष्टिकोण से सोचा जाता था। राजनीतिक दर्शन एवं शिक्षा पर मजहबी नियंत्रण था और मजहबी परिभाषाओं के अनुकूल बना दिया गया था। लोगो के कहने एवं सोचने का दृष्टिकोण भी मजहबी था।"
मध्यकालीन अथवा मुस्लिम शिक्षा का सामान्य परिचय डॉ० केई ने इन शब्दों में प्रस्तुत किया है“ ,मुस्लिम शिक्षा एक विदेशी प्रणाली थी जिसका भारत में प्रतिरोपण किया गया और जो ब्राह्मणीय शिक्षा से अति अल्प सम्बन्ध रखकर ,अपनी नवीन भूमि में विकसित हुई।”

अध्ययन उद्देश्य

इस अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य भारतीय इतिहास में मध्य काल के दौरान भारतीय शिक्षाव्यवस्था की समीक्षा करना है जिसके अंतर्गत मध्य काल में संचालित शिक्षण संस्थाएँ, पाठ्यक्रम, एवं शिक्षा की पद्धतियों का विवेचन सम्मिलित है।

अध्ययन विधि

इस अध्ययन के अंतर्गत उद्देश्य की प्राप्ति हेतु द्वितीयक स्रोतों से प्राप्त ज्ञान का विश्लेषण किया गया है। इन स्रोतों में मुख्य रूप से चर्चित पुस्तको एवं पूर्व में किये गए शोध अध्ययनों को आधार बनाया गयाहै।

मध्य कालीन शिक्षा का स्वरूप

1. मध्यकाल में शिक्षा के केंद्र

मध्यकाल के दौरान आगरा शिक्षा का प्रमुख केंद्र रहा। यहाँ सिकंदर लोदी द्वारा अनेक मकतबों व मदरसो का निर्माण कराया गया। इसी प्रकार दक्षिण भारत का बहमनी राज्य का बीदर भी इसका प्रमुख केंद्र रहा।

१. मकतब

मध्य काल अथवा मुगल काल में शिक्षा के प्रमुख के केंद्रो के रूप में मकतबों तथा मदरसों की स्थापना की गयी थी। प्रत्येक मस्जिद के निकट कम से कम एक मकतब होना अनिवार्य बात थी। ये शिक्षा के केंद्र ही इस्लामिक शिक्षा के प्रचार प्रसार का प्रमुख केंद्र थे ।मकतबों (अरबी शब्द) को प्रारंभिक शिक्षा के केंद्रो के रूप में जाना जाता था जहां बालक के प्रवेश से पूर्व एक रस्म की जाती थी जिसे मुस्लिम शिक्षा शास्त्रियों द्वारा बिस्मिलाह रस्म का नाम दिया गया।जब बच्चा 4 वर्ष 4 माह और 4 दिन का होता था तो उसे नये कपड़े पहनाकर मौलवी के पास ले जाया जाता था। मौलवी उसके सामने कुरान की कुछ आयतें पढ़ते थे जिसे बालक दोहराता था। यदि बालक आयत दोहराने में असमर्थ होता था तो मात्र" बिस्मिल्लाह 'कह देता था। इस प्रकार इस संस्कार के बाद बालक का प्राथमिक शिक्षा में प्रवेश होता था। मकतबों में अक्षर ज्ञान , पैगम्बरों के सन्देशों ,उच्चारण एवं धार्मिक ग्रन्थ से सम्बन्धित शिक्षा दी जाती थी तथा पत्र व्यवहार,धार्मिक कविताओं, फारसी व्याकरण तथा बातचीत के ढंग की भी शिक्षा दी जाती थी।

इल्तुतमिश पहला सुल्तान था जिसने दिल्ली में मदरसा स्थापित किया तथा उसका नाम मदरसा– ए -मुईजी रखा। उसके बाद बलबन ने सुल्तान नसीरुद्दीन के नाम पर मदरसा नसीरीया स्थापित किया। मिनहाज उस सिराज को इसका अध्यक्ष बनाया। मोहम्मद तुगलक के समय तक केवल दिल्ली में 1000 मदरसे थे।इन मदरसों का संचालन के लिए मदद-ए-माश अनुदान दिया जाता था।

2. मध्यकाल में शिक्षा का उद्देश्य

मध्य काल में यूँ तो शिक्षा के अनेक उद्देश्य रहे परंतु इसमें दो उद्देश्य प्रमुख रहे हैं जिन्होंने प्राचीन भारतीय दर्शन और शिक्षा को पूर्णतः समाप्त करने एवं भारतीयों पर इस्लामीकरण की शर्तें थोपने का काम किया-

२. मदरसे

प्रारंभिक शिक्षा पूर्ण कर लेने के पश्चात बालक का मदरसे में प्रवेश होता था। मदरसों को उच्च शिक्षा के केंद्रों के रूप में जाना जाताथा। यहाँ उच्च शिक्षा की व्यवस्था की जाती थी। मकतबों की तरह यह भी मस्जिदों से सम्बद्ध होते थे। इनमें विद्वान् उस्तादों द्वारा भौतिक एवं धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। अकबर के शासनकाल में मदरसों में गणित ,कानून ,कृषि , अर्थशास्त्र ,इतिहास एवं ज्योतिष ,तर्कशास्त्र ,नीतिशास्त्र , राजतन्त्र ,व्याकरण ,यूनानी चिकित्सा ,अरबी साहित्य तथा गृहशास्त्र आदि विषय पढ़ाये जाते थे। सभी मदरसों में सभी विषय नहीं पढ़ाये जाते थे। प्रत्येक मदरसा कुछ विशेष विषयों के लिये प्रसिद्ध था। कुछ मदरसों के साथ छात्रावास भी संलग्न थे।

१. इस्लामिक शिक्षा का प्रचार प्रसार

मुस्लिम कालीन शिक्षा का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य इस्लाम धर्म के रीति-रिवाजों ,परम्पराओं ,सिद्धान्तों तथा कानूनों को भारतीय जातियो तक पहुँचाना था। भारतवर्ष में मुगलो के शासन के दौरान हिन्दुओं को विभिन्न कारणों से इस्लाम धर्म को अपनाने हेतु जबरन मजबूर किया गया। इन नवदीक्षित मुसलमानों को शिक्षा के द्वारा मुस्लिम संस्कृति से परिचित कराना अत्यन्त आवश्यक था।

२. इस्लामिक राज्यों की सुदृढ़ता

भारत में मध्य काल के दौरान इस्लामिक राज्य के मुस्लिम शासकों ने शिक्षा को निजी राजनैतिक स्वार्थ सिद्धि का साधन समझा। इस काल के दौरान मुस्लिम शासकों ने शिक्षा के द्वारा अपने शासन को अधिकाधिक दृढ़बनाने का प्रयास किया। मुगल शासकों द्वारा शासन-व्यवस्था में इसलामिक संस्कृति एवं स्वरूप को अधिक स्थान दिया जाने लगा। इसका प्रमुख उद्देश्य ऐसे नागरिको का निर्माण करना था जो मुगल शासन के विरोधी न बन सकें।

3. मध्यकाल मेंपाठ्यक्रम का स्वरूप

मध्य काल में पाठ्यक्रम की अवधि 10 से 12 वर्षो तक की हुआ करती थी।पाठ्यक्रम में धार्मिकता की प्रधानता और वैधानिकता का अभाव था। इन सब के बावजूद मध्यकाल में अत्यन्त विस्तृत व व्यापक पाठ्यक्रम लागू किया गया था। छात्रों को इस्लामिक साहित्य, इस्लामिक भाषा ,फ़ारसी व्याकरण ,गणित ,इतिहास ,भूगोल , कानून ,दर्शन ,तर्कशास्त्र ,कृषि ,शिक्षा संस्थाओं का उपयुक्त चिकित्सा ,अर्थशास्त्र इत्यादि विषय पढ़ाए जाते थे।

पाठ्यक्रम विशेष रूप से दो भागों में विभाजित था।

I. **धार्मिक** धार्मिक शिक्षा के अन्तर्गत कुरान ,सूफी सिद्धान्त, इस्लाम धर्म का इतिहास तथा कानून आदि।

II. लौकिक लौकिक शिक्षा में अरबी, फारसी भाषाएँ, भूगोल, इतिहास, दर्शन, नीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, यूनानी शिक्षा, गणित, ज्योतिष, कानून, कृषि वास्तुकला, चित्रकला, संगीत आदि ।

4. मध्यकाल में संचालित शिक्षण पद्धतियाँ

मध्यकालीन शिक्षा के दौरान मौखिक एवं कंठस्थ विधियाँ ही प्रचलन में थी। शिक्षकों द्वारा भाषण विधि तथा छात्रों को स्वाध्याय विधि का अभ्यास कराया जाता था। शिक्षा की भाषा का प्रमुख माध्यम फ़ारसी ही रही।इस काल में छात्र अत्यधिक अनुशासित जीवन व्यतीत करते थे। दैनिक पाठ तैयार न होने ,झूठ बोलने , अनैतिक आचरण करने अथवा अनुशासन भंग करने पर शिक्षक शारीरिक दण्ड देते थे। इस काल के दौरान किसी प्रकार की व्यवस्थित परीक्षा प्रणाली विकसित नहीं हुई थी। शिक्षक अपने दृष्टिकोण एवं कौशल के आधार पर छात्रों को अन्य कक्षाओं में प्रोन्नत करते थे। शिक्षा की समाप्ति पर भी किसी प्रकार का प्रमाण-पत्र नहीं दिया जाता था परन्तु अपने विषय में अद्वितीय प्रतिभा दिखाने वाले साहित्य के छात्रों को' काबिल ,'धार्मिक शिक्षा के छात्रों को' आलिम 'तथा तर्क एवं दर्शन के छात्रों को फाजिल 'की उपाधि दी।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन मध्य काल के दौरान भारतीय शिक्षा व्यवस्था में हुए परिवर्तनों की व्याख्या करता है। यह अध्ययन इस बात की पुष्टि करता है कि भारत में पूर्व से ही विकसित प्राचीन वैदिक शिक्षा व्यवस्थायें मुगल शासकों द्वारा भारत पर थोपे गए इस्लामिक शिक्षा के उद्देश्यो द्वारा परिवर्तित कर दी गयी। प्राचीन शिक्षण संस्थानों के स्थान पर मकतबों व मदरसो ने इस्लाम धर्म का खूब प्रचार प्रसार किया एवं फारसी भाषा के सुदृढ़ीकरण में योगदान दिया गया। जिनके प्रभाव क्षेत्र के कारण भारत की अपनी मूल भाषाएँ हिंदी व संस्कृत का विकास लगभग बाधित ही रहा । मध्य कालीन शिक्षा न केवल इस्लामिक प्रचार प्रसार का ही माध्यम बनी बल्कि भारत में मुगलों की जड़ों को जमाने में भी अपना अहम योगदान दिया और यही कारण रहे कि मुगल शासको द्वारा फारसी और अरबी भाषा को अधिक स्थान दिया जाने लगा था।

शिक्षा का ज्यादा विकास अकबर के समय में हुआ। उसने बहुत से नए विषयों को भी शिक्षा प्रणाली का हिस्सा बनाया।

मकतब -प्रारंभिक शिक्षा मकतब के माध्यम से दी जाती थी। यह मस्जिद के साथ या उसके अलग भी होती थी। बच्चा जब 4 साल 4 महीने तथा 4 दिन का होता था तो मकतब या बिस्मिल्लाह की रस्म होती थी इसे शिक्षा के शुरुआत के लिए बहुत ही शुभ माना जाता था।

मदरसा -मदरसा शब्द अरबी शब्द है जिसका अर्थ है शिक्षण संस्थान। प्रारंभिक शिक्षा समाप्त करने के बाद बच्चों को मदरसे में भेजा जाता था।

संदर्भ सूची

1. Vipul Singh. Bhartiya Itihas: Pragtihais, 2008. ISBN:9788131708910, 8131708918
2. Dr. Manish Rannjan (IAS) 2023. Bhartiya Kala Evam Sanskriti (Indian Art and Culture Hindi, Prabhat Prakashan, ISBN: 9354885926, 9789354885921
3. Dr.Manish Khare, Dr. Babita Verma. Bharat Me Shiksha-Neti Ki Dasha Evam Disha, Shree Vinayak Publication. 2021. ISBN:9789391267230, 9391267238
4. Deepa Singh, Ranjana Jain, 2021. भारतीय शिक्षा का इतिहास, SBPD Publications